आखर हिंदी पत्रिका ; e-ISSN-2583-0597 खंड 4/अंक 1/मार्च 2024
Received: 06/03/2024; Accepted: 14/03/2024; Published: 24/03/2024

समकालीन हिंदी कविता में विष्णु खरे

- **गुलाब सिंह**
(पी एच डी, शोधार्थी)
हैदराबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय
ई-मेल: singhgulab267@gmail.com
मोबाइल. 8745981020

गुलाब सिंह, **समकालीन हिंदी कविता में विष्णु खरे**, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 4/अंक 1/मार्च 2024,(12-23)

शोध सार : समकालीन हिंदी कविता में बहुत से महत्वपूर्ण कवि हुए। उनमें एक नाम विष्णु खरे का भी है। समकालीन कविता से हमारा क्या आशय है और किन विषयों पर समकालीन कविता मुखर ढंग से अपनी बात रखती है। विष्णु खरे की काव्य भाषा और काव्य विषय पर संक्षेप में विचार किया गया है।

बीज शब्द : समकालीनता, संवेदना, काव्य भाषा, काव्य विषय, विष्णु खरे, कविता,

मूल आलेख : समकालीन का सामान्य अर्थ है- 'एक समय विशेष में रहने या होने वाला'। यह अंग्रेजी के कंटेंपरेरी का समानधर्मा है लेकिन अब हिंदी में इस शब्द के प्रयोग में एक व्यापक अर्थवत्ता है। हिंदी साहित्य में समकालीन शब्द का प्रयोग नई कविता के बाद यानी 1960 के बाद अद्यतन सृजित रचनाओं के लिए किया जा रहा है। 'समकालीन कविता की भूमिका' पहली पुस्तक है जिसमें पहली बार समकालीन कविता पदबंध का प्रयोग किया गया है। इस पुस्तक में करीब 120 पृष्ठों का एक आलोचनात्मक निबंध है जिसे 'समकालीन कविता : एक विश्लेषण' शीर्षक दिया गया है।

समकालीन कविता मोटे तौर पर 1960 के दशक से शुरू हुई मानी जाती है 1960 के बाद से आज तक का समय समकालीन कविता के संज्ञा से चिन्हित किया जाता है। वैसे तो समकालीन काल बोधक शब्द है किंतु यहाँ पर यह संज्ञा के रूप में प्रयुक्त हुआ है जिसकी कुछ अपनी भाषा, भाव और शिल्पगत विशेषताएँ हैं। वास्तव में समकालीन कविता एक छत की तरह है जिसमें अकविता, साठोत्तरी कविता, जनवादी कविता, नवगीत, स्त्रीवादी कविता, आदिवासी कविता, दलित कविता के छोटे-छोटे परिवार बसते हैं।

हर भाषा के साहित्य में कविताओं का विशिष्ट महत्व होता है। कविताओं का सीधा संबंध सम्वेदनाओं से है; ऐसा नहीं है कि कविता में विचार नहीं होते या नहीं हो सकते हैं पर रचना के स्तर पर उसे सम्वेदनाओं के साथ सामंजस्य या तादात्म्य स्थापित करना ही होता है। हिंदी भाषा के 1000 वर्षों के इतिहास में लगभग 850 वर्षों तक तो कविता का एक छत्र राज का समय है। सन् 1900 के बाद गद्य ने बड़ी तेजी से अपना विकास किया। आधुनिक काल में कविता के स्वरूप, भाषा शिल्प और कथ्य में तेजी से परिवर्तन हुआ; पर कोई भी काव्य आंदोलन अर्धशतकीय परिधि को नहीं छू सका - द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता ठीक से 20 वर्ष की आयु प्राप्त ना कर सके। 1960 के बाद कविता साठोत्तरी कविता, जनवादी कविता और विमर्शों के आइने में लिखी गई सभी कविताओं को सम्मिलित रूप से समकालीन कविता की छत के नीचे जगह मिली।

नेहरूबियन मॉडल की असफलता ने समकालीन हिंदी कविता की पृष्ठभूमि को तैयार किया। इसके सामाजिक बोध के और संवेदनाओं के निर्माण में -जनतांत्रिक मूल्यों के विघटन, शहरीकरण और वैश्वीकरण की महती भूमिका रही है। उदारीकरण, औद्योगिकीकरण, उत्तर आधुनिकता, यथार्थवादी, समाजवादी चेतना, भारत-चीन युद्ध, भारत पाकिस्तान युद्ध, आपातकाल, बाबरी मस्जिद का विध्वंस, सांप्रदायिकता, भूमंडलीकरण, पूँजीवाद, आधुनिकता ने सम्मिलित रूप से समकालीन कविता में रंग भरा है। समकालीन कविता में इन परिस्थितियों से उत्पन्न समस्याओं के कारणों की पड़ताल और उसकी गहन संवेदनात्मक अभिव्यक्ति है। समकालीन कविता युगीन चेतना से सरोवार है, यह अपने युग की समस्याओं और सम्वेदनाओं को सीधे सीधे कविता में जगह देती है। समकालीन कविता सचेतन प्रयास की कविता है। रतन कुमार पाण्डेय ने समकालीन कविता के संबंध में लिखा- "ये रचनाएँ (समकालीन कविता) भविष्य में इतिहास लेखन के सामग्री की तरह प्रयुक्त हो सकती हैं।"[1] इससे स्पष्ट है के समकालीन कविता अपने समय में घट रही घटनाओं, हो रहे संघर्षों, बदलती मानवीय संवेदनाओ को अभिव्यक्त कर रही हैं।

समकालीन कविता राजनीति से संबंधित विषय पर कभी दो टूक तो कभी व्यंग के रूप में बोलती है। राजनीतिज्ञों के पूँजीपतियों के संरक्षण और घटिया तरह के शासन प्रणालियों ने नक्सलवाद जैसी भीषण समस्या को देश की छाती पर घाव की तरह जन्म दे दिया है। नक्सलवादी आंदोलन की गूँज समकालीन कविता में दस्तक देती रही है। समकालीन कविता के सुप्रसिद्ध कवि धूमिल ने अपनी कविता 'नक्सलबाड़ी कविता' में लिखा-

भूख से रियाती हुई फैली हथेली का नाम दया है,

[1] पाण्डेय. रतन कुमार. (2002). समकालीन कविता: प्रकृति और परिवेश. दिल्ली:अनंग प्रकाशन, पृष्ठ संख्या 7

और भूख में तनी मुट्ठी का नाम नक्सलबाड़ी है।[2]

समकालीन कविता में अपनी जगह से कटे लोगों की संवेदना की सघन उपस्थिति है। समकालीन कवि जिस क्षेत्र से हटकर शहरों में आ बसे हैं उस क्षेत्र के मिट्टी की गंध उनके सांसो में कुछ इस कदर रची बसी है कि रचना के दरमियान कथ्य के रुप में उपस्थित हो ही जाता है।

स्मृतियों और एहसासों के खत्म होते जाने वाले व्यस्त जिंदगी की बुरे प्रभावों को दर्ज करने में समकालीन कविता पीछे नहीं रहती समकालीन कविता में मानवीय संबंधों की पुनः पड़ताल देखने को मिलती है।

समकालीन समय में राजनीति, समाज, धर्म, प्रेम, मानवीय मूल्य, आशा, निराशा, प्रकृति, पशु, पक्षी, भ्रष्टाचार, अनैतिकता, बलात्कार, आगजनी, आत्महत्या, हत्या, वेश्यावृत्ति, संसद, सड़क, जनवादी चेतना, विद्रोह, आक्रोश, वैश्विक घटना, बाजारवाद, शहरीकरण, औद्योगीकरण, शोषण आदि विषयों और कारणों पर कविता लिखी जा रही है। संक्षेप में अगर समकालीन कविता की प्रवृतियों को रेखांकित करना हो तो आप मान लें समकालीन कविता महावीर प्रसाद द्विवेदी की अवधारणा को- "चींटी से लेकर हाथीपर्यंत पशु, भिक्षुक से लेकर राजापर्यंत मनुष्य, बिंदु से लेकर समुद्रपर्यंत जल, अनंत आकाश, अनंत पृथ्वी, अनंत पर्वत सभी पर कविता हो सकती है।"[3] साकार करती नजर आ रही है।

इसमें रेखांकित करने वाली बात यह है कि 'सभी पर कविता हो सकती है' को अर्थवत्ता प्रदान करने का कार्य समकालीन कविता ने किया है।

समकालीन कवियों में धूमिल, विनोद कुमार शुक्ल, आलोक धनवा, रघुवीर सहाय, लीलाधर जगुड़ी, मंगलेश डबराल, विष्णु खरे, एकान्त श्रीवास्तव, स्वप्निल श्रीवास्तव, अनामिका कात्यायनी, इन्दु जैन, कुँवर नारायण, अशोक बाजपेयी, उदय प्रकाश, केदारनाथ सिंह, ज्ञानेन्द्रपति, वेणुगोपाल, ओम प्रकाश वाल्मीकि और भी बहुत से कवि रचना कर्म में लिप्त रहे हैं।

'साहित्य जब तक चेतना और जागरूकता न पैदा करे वह अनुपयोगी है।' का विचार रखने वाले विष्णु खरे समकालीन हिंदी कविता के एक महत्वपूर्ण और विशिष्ट कवि हैं। इसके साथ ही फिल्म समीक्षक, पत्रकार एवं कुशल अनुवादक के रूप में इन्हें ख्याति प्राप्त है। महज 20 वर्ष की उम्र में इन्होंने टी एस इलियट की कविताओं का 'मरू प्रदेश और अन्य कविताएँ' नाम से अनुवाद किया था।

[2] धूमिल. सुदामा पाण्डेय. (2009). संसद से सड़क तक. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन

[3] संपादक डॉ. नगेन्द्र और डॉ. हरदयाल. (2012). हिंदी साहित्य का इतिहास. दिल्ली : नेशनल पब्लिशिंग हाउस. पृष्ठ संख्या 479

प्रेमचंद, कृश्नचंदर, मंटो, मैक्सिम गोर्की जैसे समाज चेता रचनाकारों को पढ़ने वाले कवि विष्णु खरे की चेतना ने बहुत छोटी उम्र में तय कर लिया था कि उनका लेखन किसके लिए होगा। इसी कारण इनके काव्य संसार में समाज और राजनीति पर कविताएँ सहज ही प्राप्त होती हैं। अपने दो टूकपन के कारण विष्णु खरे विवादों में भी रहे किंतु इन सबके बाद भी हिंदी कविता में उनका मुकाम आश्चर्यचकित कर देने वाला है । स्त्री, मिथक, इतिहास, संवेदना, पीढ़ी अंतराल, उपेक्षित वर्ग, सांप्रदायिकता, विभाजन, शाश्वत मूल्य, एकाकीपन, प्रकृति, पशु, पक्षी, परिवार, कुप्रथाएँ आदि आदि विषयों पर कविता करने वाले विष्णु खरे के काव्य का फलक बहुत बड़ा है जिसमें किसिम किसिम की सम्वेदनाओं के लिए स्थान है।

अगर आप कविता पढ़ने की परंपरागत आदतों के साथ और अपेक्षाओं के साथ विष्णु खरे की कविताओं के पास जाते हैं तो आपको निराशा ही हाथ लगेगी। विष्णु खरे की कविता पाठक के काव्यस्वाद को बदलने और शिल्प तथा भाषा के अनूठे इस्तेमाल से हिंदी कविता को समृद्ध करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका दर्ज करती है।

विष्णु खरे की कविता हाय को जन्म देने की जगह करुणा और विवेक को जन्म देती है। विष्णु खरे की कविता को पढ़ने पर हृदय द्रवित नहीं मस्तिष्क झंकृत होता है, जिससे कविता में उपस्थिति विषय पर हम सोचने को विवश होते हैं। समकालीन कवियों में धूमिल, रघुवीर सहाय, विनोद कुमार शुक्ल ने भाषा को अलग ढंग से प्रयोग कर कविता के लिए नए शिल्प को गढ़ा। विष्णु खरे इसी परंपरा में एक अन्य महत्वपूर्ण नाम हैं, जिन्होंने रघुवीर सहाय की गद्यात्मक भाषा को विस्तार दिया। और इस तरह कविता के लिए एक नये शिल्प के गठन में अपनी महती भूमिका दर्ज की है।

उन्होंने पहला कविता संग्रह एक 'गैर रूमानी समय में' 1970 ई. में खुद छपाया लेकिन उसकी अधिकांश कविताएँ अशोक वाजपेयी ने अपनी 'पहचान' सीरीज की पहली पुस्तिका 'विष्णु खरे की कविताएँ' के लिए ले लीं इसलिए उसे प्रकाशित नहीं किया । दूसरा संग्रह 'खुद अपनी आँख से' 1978 ई. में, तीसरा काव्य संग्रह 'सब की आवाज़ के पर्दे में' 1994 ई. में, चौथा संग्रह 'पिछला बाकी' 1998 ई. में, पाचवाँ संग्रह 'काल और अवधि के दरमियान' 2003 ई. में, और छठा काव्यसंग्रह 'और अन्य कविताएँ' 2017 ई. में छपी। इनकी एक समीक्षा पुस्तक है 'आलोचना की पहली किताब' जो 1983 ई. में प्रकाशित हुई।

विदेशी कविता से हिंदी तथा हिंदी से अंग्रेजी में अनुवाद कार्य भी इन्होंने किया। समकालीन हिंदी कविता के अंग्रेजी अनुवादों का संग्रह 'द पीपुल एंड द सेल्फ के' अलावा अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद 'यह चाकू समय', 'हम सपने देखते हैं', 'कालेवाला', 'अगली कहानी', 'हमला', 'दो नोबेल पुरस्कार विजेता' आदि उल्लेख्य अनुवाद हैं।

विष्णु खरे द्वारा लिखित सैकड़ों संपादकीय, लेख, फिल्म समीक्षा आदि नवभारत टाइम्स में छपे हैं। अंग्रेजी में 'दी पायनियर', 'हिंदुस्तान टाइम्स', 'फ्रंटलाइन' आदि में फिल्म तथा साहित्य पर अनेक लेख विष्णु खरे के छपे हैं।

'कालेवाला सोसाइटी फिनलैंड यूनेस्को', 'केंद्रीय साहित्य अकादमी', 'दिल्ली हिंदी अकादमी' आदि महत्वपूर्ण संस्थानों की सदस्य भी वे रहे। फिनलैंड का राष्ट्रीय 'नाइट ऑफ द ऑर्डर ऑफ द वाइट रोज' सम्मान', 'रघुवीर सहाय सम्मान', 'शिखर सम्मान', 'हिंदी अकादेमी दिल्ली का साहित्य सम्मान', 'मैथिलीशरण गुप्त सम्मान' से उन्हें सम्मानित किया गया।

विष्णु खरे के व्यक्तित्व का थोड़ा सा परिचय प्रकाश मनु के इस कथन से मिल सकता है- "जो जैसा महसूस होता है, ठीक ठीक वैसे ही कहना - आज के उलझे हुए संशयालु वक्त में कोई छोटा साहस नहीं है। और फिर इनके हर जवाब या सोच के केंद्र में देश के मौजूदा हालात में हर कहीं पिट रहा छोटा, बेबस आदमी है जिसकी लड़ाईयाँ खुद-ब-खुद विष्णु खरे की लड़ाईयाँ हो जाती हैं। और उनकी कविता एक अलग तरह की 'प्रतिबद्ध' कविता हो जाती है, जिसमें प्रतिबद्धता के फार्मूले और नारेबाजी गायब हैं।...उनके विचार आम आदमी के पक्ष की राजनीति में, गुस्से और उत्तेजना से लबालब विचार हैं और निरंतर लड़ते और पिटते हुए आदमी के लिए जैसी तड़प वहाँ है, वैसी तो मुझे मार्क्सवाद के बहुतरे 'होल टाइमरों' में भी दिखाई नहीं पड़ती।"[4] प्रकाश मनु का यह अवलोकन विष्णु खरे की कविताओं के संदर्भ में बिल्कुल खरा उतरता है।

विष्णु खरे की कविता शहरी समाज में घट रही घटनाओं के प्रति उदासीन बनी तमाशाई भीड़ की असंवेदनशीलता और असक्रियता को रेखांकित करती है। जो काम रघुवीर सहाय ने 'रामदास' कविता के माध्यम से किया उसी को और मुखर ढंग से विष्णु खरे ने 'तुम्हें' शीर्षक कविता में किया है। एक निरपराध के प्रति संवेदना जगाकर।

विष्णु खरे की कविताएँ आत्मकथात्मक तथा संस्मरणात्मक विशेषताओं से युक्त हैं। इनकी बहुत सी कविताओं को पढ़ने पर ऐसा लगता है कि यह विष्णु खरे की जिंदगी का निजी अनुभूतियों का संसार है किंतु फिर भी आप उसे बड़ी शिद्दत से महसूस करते हैं। कुछ कविताओं में तो उनका निजी जीवन सीधे-सीधे लक्षित किया जा सकता है- 'टेबिल' में उनकी चार पीढ़ियों पता चलता है, 'नेहरू-गांधी परिवार के साथ मेरे रिश्ते' कविता में विष्णु खरे ने अपने नेहरू परिवार के साथ रिश्ते का परिचय संस्मरणात्मक ढंग से दिया है, लेकिन यह महज परिचय ना होकर आगे राजनीतिक चेतना की कविता बन जाती है-

और वह भी इसलिए कि कुनबा परस्ती और व्यक्ति पूजा से मुझे नफरत है

लेकिन हिटलर के हिंदुस्तानी वंशज बढ़ते आ रहे हैं

और हम जैसों को अपने परिवारों को किसी कदर उनसे बचाना है

[4] मनु. प्रकाश. (2004). एक दुर्जय मेधा विष्णु खरे. दिल्ली:वाणी प्रकाशन.पृष्ठ संख्या 27

उनसे जो मुझे जैसे भी बचाएं मैं उन सभी के साथ होना चाहूंगा।[5]

'चौथे भाई के बारे में' कविता में वे असमय मृत्यु को प्राप्त भाई को याद करते हैं। अपने निजी अनुभूतियों को उसकी तमाम कशमकश के साथ प्रस्तुत करने में विष्णु खरे को महारत हासिल है।

विष्णु खरे लंबी कविताओं के कवि हैं उनके यहाँ लंबी कविताओं की अच्छी खासी संख्या है। इन कविताओं के माध्यम से वह कुछ महत्वपूर्ण समस्याओं की ओर इशारा करते हुए चलते हैं साथ ही समाधान की तलाश भी। इनकी कविताओं में एक भी पंक्ति छूटने पर अर्थ संप्रेषण में समस्या हो सकती है, इस कारण उनकी कविताओं को बेहद सतर्कता के साथ पढ़ने की आवश्यकता होती है। 'गुँग महल', 'लालटेन जलाना', 'अकेला आदमी', 'गूंगा', 'सिर पर मैला ढोने की अमानवीय प्रथा' कुछ ऐसी ही लंबी कविताएँ हैं। 'गुँग महल' कविता धार्मिक मान्यताओं को तर्कों की कसौटी पर कस कर उसकी चिंदी चिंदी उड़ा सांप्रदायिक श्रेष्ठता की भावना को अवरुद्ध करने का काम करती है। अकबर अनपढ़ होने के बाद भी चीजों, घटनाओं, वस्तुओं को लेकर तर्क के अभाव में कोई फैसला नहीं लेता था, तो फिर आज की पढ़ी-लिखी जनसंख्या क्यों मूर्खों की तरह किसी एक नारे, मुहावरे की आड़ में लामबंद होकर अमानवीय कृत्य को अंजाम देने तक का कार्य करती है।

'सिर पर मैला ढोने की अमानवीय प्रथा' समाज में व्याप्त एक कुप्रथा कि बेहद बारीकी से जाँच पड़ताल करती है। कवि कहता है-

अब यदि हम जोर सिर पर देते हैं

तो ध्वनि यह निकलती प्रतीत होती है

कि यदि मैला सिर के बजाय

कंधों पीठ या कमर पर ढोया जाएगा

तो प्रथा अमानवीय नहीं रहेगी

अगर वह हाथ से खींची जाने वाली

एक या दो कोठियों वाली गाड़ी में भी ले जाया जाए

तो शायद मानवता का नुकसान ना हो

मुहावरे को सिर पर नहीं दिमाग में रखे हुए

यदि हम बल मैला ढोने पर देते हैं

[5] खरे. विष्णु. (2019). सेतु समग्र:कविता. दिल्ली : सेतु प्रकाशन. भूमिका पृष्ठ-290

तो कुछ यूं लगेगा कि इसे ढोना भले ही अमानवीय हो

कुछ और ढोना

यानि दूसरों का सामान बोझा कचरा चिथड़े

जिंदा या मुर्दा जानवर या इंसान

अमानवीय नहीं कहलाएगा[6]

और इसी तरह बेहद बारीकी से अमानवीयता के कुछ ऐसे रूपों की ओर यह कविता हमारा ध्यान खींचती है जिसे हम सहज मानते चले आए हैं जैसे- एक परिवार में एक पुरुष निरंतर कार्य करता हुआ पाँच लोगों का भरण पोषण करता है तो क्या यह अमानवीय नहीं है?

'आग' कविता रोज घटने वाली दहेज प्रताड़ना को लेकर है । इसे पढ़ने पर ऐसा लगता है कि ऐसी घटनाओं के घटने को आप जान रहे हैं तो इस मुद्दे को प्रसंग से बाहर करने की कोशिश करें, इसे बदल देने की कवायद करें। विष्णु खरे की कविता 'कविता कविता के लिए' की सुविधा से हमें वंचित करती है। इस मामले में परंपरागत रूप से अच्छी कविताएँ होने की बजाय बुरी कविता साबित होती है क्योंकि, अपने कष्ट में आपसे हिस्सेदारी माँगती हैं। यह स्त्रियों के जलाए जाने की पीड़ा को भाषणों के उत्सव में नहीं बदलती। इस मामले में ये बुरी कविताएँ हैं कि ये परंपरागत रूप से अच्छी 'फिर से पढ़ो' वाले तर्ज पर पढ़े जाने वाले कविताएँ नहीं है बल्कि यह संवेदनशील पाठक को चुप करा देने वाली कविताएँ हैं। ये वे कविताएँ हैं जो आँखों में आँखें डाल कर खड़ी हो जाती हैं। 'आग', ' लड़कियों के बाप', 'जिल्लत', 'बेटी', 'हमारी पत्नियाँ', 'बच्चा', 'एक कम', 'साम्बवती' आदि ऐसी ही बुरी कविताएँ हैं जो कहती हैं अगर यह स्थितियाँ हैं, और बुरी हैं; तो इसके कारण आप भी हैं संभव हो तो हटाए नहीं तो चर्चा कर उत्सव ना मनाएँ।

विष्णु खरे की कुछ कविताएँ सामने आये दृश्यों को एकदम नए तरह के दृष्टिकोण से देखने की वकालत करती हैं और उसमें सफल भी होती हैं- 'एक कम', 'उनसे पहले', 'विलोम' इसी तरह की कविताएँ हैं। भारतीय समाज में या किसी भी समाज में भिखारी सहानुभूति और दया का पात्र रहा है, किंतु 'एक कम' कविता का विन्यास कुछ इस तरह से है कि भिखारी आपके लिए सहानुभूति का पात्र नहीं रह जाता है। निराला भिक्षुक कविता में एक ऐसे भिखारी का चित्र खींचते हैं जो नितांत असहाय और आपकी कृपा का पात्र होकर कलेजे को दो टूक कर देता है-

वह आता

दो टूक कलेजे के करता, पछताता

[6] खरे. विष्णु. (2019). सेतु समग्र:कविता. दिल्ली : सेतु प्रकाशन. भूमिका पृष्ठ-490

पथ पर आता

किंतु विष्णु खरे की 'एक कम' कविता में जो भिखारी आता है वह आपसे खुद को ज्यादा ईमानदार घोषित कर आपके मुंह पर न दिखने वाला जोर का तमाचा मारता है। कवि लिखते हैं-

या मैं भला चँगा हूँ और कामचोर और

एक मामूली धोखेबाज

लेकिन पूरी तरह तुम्हारे संकोच लज्जा परेशानी

या गुस्से पर आश्रित

तुम्हारे सामने बिल्कुल नंगा निर्लज्ज और निराकाँक्षी

मैंने अपने को हटा लिया है हर होड़ से

मैं तुम्हारा विरोधी प्रतिद्वंदी या हिस्सेदार नहीं

मुझे कुछ देकर या न देकर भी तुम

कम से कम एक आदमी से तुम निश्चिंत रह सकते हो[7]

इस तरह यह कविता चीजों को एकदम नये तरीके से देखने की अपील करती है, जो जैसा दिख रहा है या जिस तरह की दृष्टि हमें विषयों को देखने की प्राप्त है, उससे नितांत भिन्न।

अतीत को याद करना और उसे कविता का रूप देना समकालीन कविता की सामान्य विशेषता रही है। विष्णु खरे की कविताएँ भी इस विशेषता से युक्त हैं 'लालटेन जलाना' कविता एक ऐसी ही कविता है। केदारनाथ सिंह के शब्दों में अगर कहें तो- "वे लालटेन लिखते नहीं उसे देखते हैं और इस तरह देखते हैं कि वह जिंदा होती जाती है जैसे कि कोई जला रहा हो। उससे जुड़ी एक एक चीज को शब्दों में ज़िंदा कर देना एक कवि की सिफ़त है और विष्णु खरे के पास वह जादू है।...विष्णु खरे अतीत के कबाड़ से उसे फिर ढूँढ लाते हैं।"[8]

इस तरह अतीत में जाना भी उनके यहाँ अलग तरीके से है। इनकी एक और कविता है 'और नाज़ मैं किस पर करूँ' यह कविता हमारे समाज की उस खूबसूरत स्मृतियों की ओर ले जाती है जहाँ व्यक्ति और व्यक्ति के बीच मजबूत संबंध हुआ करते थे। गाँव की पूरी संरचना में संबंधों में गर्मी आज तक भी बरकरार है हालाँकि उसमें क्षरण प्रारंभ हो चुका है। इस कविता में एक पंक्ति है- "अब तुम्हारा बाप किसी से मेलजोल क्यों नहीं रखता बेटे"

[7] खरे. विष्णु. (2019). सेतु समग्र:कविता. दिल्ली : सेतु प्रकाशन. भूमिका पृष्ठ-100

[8] खरे. विष्णु. (2017). प्रतिनिधि कविताएँ. दिल्ली:राजकमल प्रकाशन. पृष्ठ संख्या-3

यह इस सदी के शहरी जीवन शैली की कोख से जन्मी एक ऐसी समस्या है जिसमें आप लोगों से मतलब ना रखकर अकेले, और अकेले होते जाते हैं।

आधुनिक जीवनशैली में अकेलापन एक अनिवार्य सच्चाई सी बन गई है इस सच्चाई को विष्णु खरे अपने कुछ कविताओं में साकार करते दिखाई पड़ते हैं। 'अकेला आदमी', 'देर से आने वाले लोग' कुछ ऐसी ही कविताएँ हैं जो अकेले व्यक्ति की कथा कहती है। कवि को मालूम है कि इस अकेलेपन का एक मात्र सहारा स्मृतियाँ हैं-

एक अकेला आदमी लौटता है बहुत रात गए या शायद पूरी रात बाद भी

घर के खालीपन को स्मृतियों के गुच्छे से खोलता हुआ।[9]

विष्णु खरे की कविताओं के कुछ विषय जोखिमों को उठाने वाले विषय हैं। उदाहरण के लिए 'विलोम' एक ऐसी ही कविता है जिसका विषय सरकारी, गैरसरकारी, अर्द्धसरकारी कार्यस्थलों में काम करने वाले व्यक्ति के लिए जाना पहचाना है, किन्तु संवेदनात्मक कारणों से इसे कविता का कथ्य बनाने कि हिमाकत विष्णु खरे जैसे कवि ही कर सकते हैं। कविता को पढ़ने के क्रम में थोड़ी ईमानदारी से अपनी संवेदनाओं का विश्लेषण करते हैं तो आप पायेंगे ये जो सब लिखा गया है वह अक्षरशः सत्य है-

कहना मुश्किल है कि

हर वह व्यक्ति

जिसके लिए शोक सभा की जाती है

उस शोक का हकदार होता है भी या नहीं

जो शोक उसके लिए मनाया जाता है वह सच्चा होता है या नहीं

और जो उसके लिए शोक मना रहे होते हैं इनमें से कितने वाकई शोकार्त होते हैं[10]

विष्णु खरे के काव्य संसार में अच्छी कविताएँ अधिक संख्या में है। इनकी कविताओं में मिथक को आधार बनाकर लिखी गई कविताएँ 'लापता', 'द्रौपदी के विषय में कृष्ण', 'सत्य', 'वृन्दावन की विधवाएँ' उल्लेखनीय कविताएँ हैं। यहाँ मिथकीय पात्र एक आम आदमी की तरह ही दिखाई पड़ता है। कवि ने इन पात्रों को आधुनिक सवालों और संवेदनाओं के बरक्स देखने का प्रयास किया है। सत्य कविता में विदुर का पीछा युधिष्ठर सत्य जानने के लिए करते हैं लेकिन विदुर पकड़ में नहीं आते मानो

'सत्य जानना चाहता है

[9] खरे. विष्णु. (2019). सेतु समग्र:कविता. दिल्ली:सेतु प्रकाशन. भूमिका पृष्ठ-27

[10] खरे. विष्णु. (2017) और अन्य कविताएँ. दिल्ली:राधाकृष्ण प्रकाशन पृष्ठ संख्या-5

कि उसके पीछे हम कितनी दूर तक भटक सकते हैं।

आप किस शर्त तक उसे पाने के लिए प्रयास करेंगे। और अंत में वह प्रकाश बन युधिष्ठर में समा जाता है। कविता सत्य के सम्बन्ध में एक समझ देती है उसे जाना नहीं जा सकता। वह जानने की नहीं, जीने की, अनुभव करने कि चीज है।

प्रकृति और प्रेम भी इनकी कविताओं में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। किंतु ऐसे विषयों पर की कविता में भी भाषा का ठहराव भावुक नहीं होने देता। 'सुन्दरता', 'लुकाछिपी', 'कल्पनातीत' कविता उनके प्रकृति के प्रति लगाव को ही अलग ढंग से प्रस्तुत करती हैं।

'सरोज स्मृति', 'द्रौपदी के विषय में कृष्ण', 'गर्मियों की शाम' उनकी प्रेम कविताएँ हैं। प्रेम की सान्द्रता की कविता। और बहुत सी कविताएँ हैं जिनका जिक्र किया जा सकता है मसलन- 'बेटी', 'झूठे तार', 'दिल्ली में अपना फ्लैट बनवा लेने के बाद एक आदमी सोचता है', 'जो टेम्पो में घर बदलते हैं', 'हर शहर में एक बदनाम औरत होती है' आदि।

सामान्यतः विष्णु खरे के काव्य का ढाँचा गद्य भाषा के निकट ही है लेकिन कुछ कविताएँ उन्होंने परम्परागत शैली अर्थात् लय को सँभालते हुए भी लिखी है ऐसी ही दो कविताओं का जिक्र जरूरी जान पड़ता है -'बजाए गजल' और 'डरो'।

अगर आप विष्णु खरे की कविताओं में लय ढूँढना चाहते हैं तो ये दो कविता आपके लिए है। बजाए गजल श्रमिक जन की कविता है इसमें शोषकों के प्रति खूब आक्रोश है-

जो भूखों बेघरों से उनके हक छीने

कभी रहम न हो उस निज़ामे कमीने पर

और मेहनतकश लोगों के पक्ष में-

नहातीं मजदूरनें पखारें एड़ियाँ जिससे

वह ठीकरा भारी है हर नगीने पर[11]

डरो कविता प्रकारान्तर से आप को सही के पक्ष में खड़े होने की अपील करता है

कहो तो डरो कि हाय ये क्यों कह दिया

[11] खरे. विष्णु. (2019). सेतु समग्र:कविता. दिल्ली:सेतु प्रकाशन. भूमिका पृष्ठ संख्या- 348

न कहो तो डरो कि पूछेंगे चुप क्यों हो....

डरो तो डरो कि कहेंगे डर किस बात का है

न डरो तो डरो कि हुकुम होगा डर[12]

निष्कर्ष : विष्णु खरे समकालीन कविता के एक जरुरी हस्ताक्षर हैं। जिनके यहाँ हर मिजाज की कविता पढ़ने को मिल जाती है। इनकी भाषा का आवरण बहुत शुष्क जान पड़ता है जिसके भीतर काव्य रस की नदी बहती है। विष्णु खरे के काव्य का विषय और उनकी भाषा तथा कविता का रचाव ऐसा है कि उसे विलग करके नहीं देखा जा सकता। अधिकांश कविताओं की भाषा भावना को बहुत संयत तरीके से काव्य में पिरोती है। मंगलेश डबराल ने विष्णु खरे के सम्बन्ध में सही लिखा कि- "कविता कि भाषा भी एक मार्मिक कथ्य को वस्तुपरक ढंग से, बिना भावुकता के चित्रित करने वाली थी जैसे कवि यह बता रहा हो कि शब्द किसी करूण अनुभव को भी कितने संयत ढंग से सम्हाल सकते हैं।"[13] भाव और भाषा के इस अन्यतम प्रयोग के लिए विष्णु खरे एक मानक कवि हो सकते हैं। भावना को संयत ढंग से रखने की कला में खरे निष्णात हैं। जितेन्द्र श्रीवास्तव लिखते हैं- "विष्णु खरे कि एक विशेषता यह है कि वे निर्भावुक ढंग से कविता में अपनी बात रखते हुए पाठक को भावुक बना देते हैं। चेतस भावुक। कह सकते हैं कि खरे भी भावुकता के दोहन की कला में माहिर हैं।"[14] इनको पढ़ने के मिजाज कि निर्मिती एक पाठक के लिए थोड़ा मुश्किल है लेकिन यह प्रक्रिया बेहद रोमांचक होगी। विष्णु खरे समकालीन कविता के विशिष्ट कवियों में से एक है जिन्होंने कवि कर्म को गंभीरता से लिया है। वे पाठक और आलोचक दोनों के लिए सामान रूप से पठनीय हैं। जिन्हें गद्य कविता लिखना मजाक लगता है उनके लिए खरे एक मानक हैं। जो विवरण से कविता लिखना चाहते हैं उन्हें खासतौर पर विष्णु खरे को पढ़ना चाहिए। 'लडकियों के बाप', 'लालटेन जलाना', 'अकेला आदमी', 'टेबिल' ऐसी ही कविताएँ हैं जिहें विवरण से निर्मित किया गया है। 'लड़कियों के बाप' कविता के सम्बन्ध में जितेन्द्र श्रीवास्तव लिखते हैं- "इस कविता को उन लोंगों को अवश्य पढ़ना चाहिए जो विवरण से कविता बनाते हैं और अक्सर गुड़ गोबर कर देते हैं।"[15] अंततः इतना ही कहना है विष्णु खरे समकालीन हिंदी कविता के महत्वपूर्ण कवि हैं जिन्हें आलोचना और अनुसन्धान की दुनिया में अपेक्षित महत्त्व नहीं मिला है।

संदर्भ ग्रन्थ:

1. एक दुर्जय मेधा विष्णु खरे- प्रकाश मनु, वाणी प्रकाशन, सन्-2004

2. समकालीन कविता के आयाम- संपादक पी रवि

[12]खरे. विष्णु. (2019). सेतु समग्र:कविता. दिल्ली : सेतु प्रकाशन. भूमिका पृष्ठ संख्या- 213

[13]खरे. विष्णु. (2019). सेतु समग्र:कविता. दिल्ली : सेतु प्रकाशन. भूमिका पृष्ठ-x

[14] श्रीवास्तव. जितेन्द्र. (2021). कविता का घनत्व. दिल्ली : सेतु प्रकाशन. पृष्ठ संख्या 71

[15] श्रीवास्तव. जितेन्द्र. (2021). कविता का घनत्व. दिल्ली : सेतु प्रकाशन. पृष्ठ संख्या 64

3. आलोचना की पहली किताब- विष्णु खरे, वाणी प्रकाशन, सन्-1983

4. समकालीन हिंदी कविता- विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, लोकभारती प्रकाशन, सन्-1982

5. महाकाव्य विमर्श- सं.विष्णु खरे, वाणी प्रकाशन, सन्-1999

6. समकालीन कविता प्रकृति और परिवेश- रतन कुमार पाण्डेय, अनंग प्रकाशन, सन्-2002

7. समकालीन कविता और मार्क्सवाद- आशुतोष कुमार, प्रकाशक-शिल्पायन, सन्-2000

8. समकालीन कविता का व्याकरण- परमानंद श्रीवास्तव, शुभदा प्रकाशन, सन्-1980

9. कविता अभी बिल्कुल अभी- नंद किशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, सन्-2014

10. हिन्दी कविता का तापमान- डॉ.प्रमोद कोपव्रत, जवाहर पुस्तकालय (मथुरा), सन्-2011

11. समकालीन हिंदी काव्य दशा और दिशा- डॉ. जयप्रकाश शर्मा, अनंग प्रकाशन ,सन्-2004

12. कविता का अर्थात्- परमानंद श्रीवास्तव, आधार प्रकाशन, पंचकूला सन्-1999

13. कविता की संगत- विजय कुमार, आधार प्रकाशन, सन्-1996

14. साठोत्तरी हिन्दी कविता? परिवर्तित दिशाएँ- विजय कुमार, प्रकाशन संस्थान, सन्-1986

15. समकालीन कविता की भूमिका- विश्वम्भरनाथ उपाध्याय/मंजुल उपाध्याय, मैकमिलन प्रकाशन, सन्-1976

****